Dainik Bhaskar (Indore), 23rd September 2025, Page – 04

एम्स दिल्ली के एक आईसीयू में सेटअप • 30 लाख तक की प्रति आईसीयू प्रतिवर्ष की बचत

आईसीयू में लगे मॉनिटर्स की डिजिटल ट्रैकिंग के लिए IIT इंदौर के इन्क्यूबेशन सेंटर ने तैयार किया 'सारथी' प्लेटफॉर्म

सौदामिनी ठाकुर | इंदौर

अस्पतालों के आईसीयू में 10 से 12 घंटे की लगातार ड्यूटी करने वाले डॉक्टर और नर्स अक्सर अलग-अलग मॉनिटर्स के बीप और उनके आवाजों से इतनी अभ्यस्त और मानसिक थकान के शिकार हो जाते हैं, कि कई बार उन आवाजों में मिले हुए अलर्ट समझ नहीं आते। इसके अलावा आमतौर पर देश के अस्पतालों में आईसीयू मरीजों की जानकारी कागज पर दर्ज की जाती है, जिसे डॉक्टर अपनी शिफ्ट के समय देखते हैं और फिर निर्णय लेते हैं। इससे रियल टाइम में निर्णय लेना असंभव हो जाता है। मरीजों की सुरक्षा पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

इसी समस्या के समाधान के लिए आईआईटी इंदौर के इन्क्यूबेशन सेंटर ने अपने चरक-डीटी (डिजिटल ट्विन) प्लेटफॉर्म पर एक ऐसा प्रोग्राम बनाया है, जो की रियल टाइम में मरीजों के सभी मुख्य स्वास्थ्य मापदंडों को ट्रैक करेगा। ये प्रोग्राम एआई की मदद से किसी भी गंभीर स्थिति का पूर्वानुमान लगाकर मरीजों की मदद कर सकता है। इस सिस्टम में वर्तमान में एम्स दिल्ली में एक आईसीयू में लागू किया गया है। खासतौर पर न्यूरो ट्रामा के मामलों में इसे इस्तेमाल किया जा रहा है।

इस तरह का होता है सेटअप

इस सेटअप में 3-4 मरीजों के बीच एक कैमरा और एक अस्पताल में एक सर्वर लगाया जाता है। इसमें मरीज के वेंटीलेटर का मॉनिटर, पैरा मॉनिटर (जो ऑक्सीजन, बीपी, हार्ट रेट और टेम्प्रेचर दिखाता है), फ्यूजन पंप का डाटा एक साथ मॉनिटर किया जाता है। इसके अलावा मरीज के आसपास की गतिविधियों को भी ये कैमरा ट्रैक कर सकता है। स्टाफ ने उचित पहनावा जैसे ग्लव्स, हेड कैप आदि पहनी है या नहीं, सैनीटाइजर का उपयोग किया है या नहीं, मरीज की गतिविधियां, मुंह या नाक में डली नलियों में कहीं ब्लॉकिज तो नहीं है, ये सब भी सिस्टम देख सकता है और अनियमितता होने पर अलर्ट कर सकता है। इसके लिए आईसीयू में एक सर्वर लगाया जाता है जिसमें सारा डाटा स्थानीय रूप से ही से सेव होता है जिससे डाटा चोरी की आशंका न हो।

एक सेटअप में लगते हैं 10 लाख, निमोनिया के मरीज को रहता है ज्यादा खतरा

प्रोजेक्ट पर काम कर रहे दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन के सीईओ आदित्य व्यास ने बताया कि एक आईसीयू में इस पूरे सेटअप को लगाने का खर्च 10 लाख रुपए का है। न्यूरोसर्जरी वार्ड में, और विशेष रूप से ट्रॉमा के केसेस में आईसीयू के मरीजों को निमोनिया का ज्यादा खतरा रहता है। इस खतरे को यह मशीन भांप सकती है। इसके आधार पर सही एक्शन लेकर निमोनिया को रोका जा सकता है। इस बीमारी के प्रचलन को देखते हुए, एक साल में एक आईसीयू में 30 लाख रुपए तक की मरीजों और इंश्योरेंस कंपनियों की बचत हो सकती है। इस पूरे सेटअप को डेवलप करने के लिए चरक डिजिटल हेल्थ केयर सेंटर आफ एक्सीलेंस की टीम के साथ-साथ पांच अलग-अलग स्टार्टअप्स की टीम में भी जुड़ी हुई है।